(Mrs.) Mridula Sinha
Governor of Goa
(श्रीमती) मृदुला सिन्हा
राज्यपाल, गोवा

सत्यमेव जयते

Raj Bhavan
Goa-403004
राज भवन
गोवा–403004

संदेश

शुभेच्छा - विवाह पूर्व परामर्श केन्द्र के लिए

संप्रदाय कोई भी हो, विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार है । किसी भी रीति-रिवाज से विवाह संपन्न हो, उसका दीर्घायु होना सबके हित में होता है । दूल्हा-दुल्हन, परिवार, बच्चे, समाज और सरकार भी । विवाह के समय लिए गए शपथ और वचन का अर्थ होता है विवाह को निभाना । और समाज को संवद्धिर्त और संस्कारित करना । इधर कई वर्षों से अपने देश में भी विवाहों के धड़ल्ले से टूटने की खबरें आ रही हैं । इस टूटन के कारणों में लड़कियों की महत्वकांक्षी शिक्षा और आत्मनिर्भरता को भी माना जाने लगा है । एसी बात नहीं है । दरअसल आज पढ़ाई-लिखाई के बोझ तले लड़के-लड़कियों को विवाह के बारे में सोचने और मन बनाने का समय ही नहीं मिलता । 1977 में दिल्ली में संचालित "परिवार परामर्श समिति" में कम करते हुए मुझे यह एहसास हुआ था कि पति-पत्नी के बीच आपसी मनमुटाव, दो परिवारों के बीच खिंचातानी तथा विवाह से संबन्धित अन्य मामलों के घटने के पीछे युवा पीढ़ी के मन में विवाह के उद्देश्य कि जानकारी और उसे निभाने की कला का अभाव है । इसलिए परिवार परामर्श से पहले 'विवाह पूर्व परामर्श' आवश्यक है । 1998 में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष के नाते मैंने इस विचार को समाज के सामने रखा था । एक राष्ट्रीय गोष्ठी भी करवाई थी । सभी मजहवों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था । हिन्दू, क्रिश्चन, मुस्लिम, पारसी सभी आए थे । क्योंकि हमारे समाज में भिन्न-भिन्न रीतियों से विवाह संपन्न होते हैं । यूं तो विवाह के समय सभी पंडित, मुल्ला और पादरी विवाह के दीर्घायु होने के ही सूत्र बतलाते हैं, लेकिन इतने से बात नहीं बनती । हमारे लोक-जीवन में विवाह को स्थायित्व प्रदान करने की शिक्षा, लोकगीतों, लोकरीतियों और अन्य पर्व-त्योहारों के माध्यम से दी जाती थी । अपने घरों में ही लड़के-लड़कियां बचपन से तीन-तीन पीढ़ियों के जोड़ियों के बीच नोंक-झोंक लड़ते-झगड़ते, आपस में बिना संवाद के भी विवाह को निभते देखते थे । इतनी बात तो समझ में आती थी कि विवाह न मनोरंजन के लिए होता है न मात्र दो व्यक्तियों के बीच का संबंध । विवाह एक कर्त्तव्यपालन है वहीं दो परिवारों के बीच का संबंध भी ।

अब शहरी एकल जीवन, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई तथा अपना जीवन जीने की ललक, बहुत सी पारंपरिक मान्यताओं और पारिवारिक व्यवहारों को समाप्त कर रहे हैं । इनके कारण विवाह धड़ल्ले से टूट रहे हैं । दो व्यक्तियों की समस्याएं ही नहीं, परिवारों, समाज और सरकार की समस्याएं भी बढ़ रही हैं । अधिक से अधिक रुपए कमाने की शिक्षा लड़का-लड़की दोनों को दी जा रही है । पर अधिक दिनों तक या पूरी जिन्दगी विवाह को निभाने की शिक्षा नहीं दी जा रही । मैंने जब विवाह पूर्व परामर्श की आवश्यकता पर बल दिया था तो कई लोगों ने इसे यौन शिक्षा से संबंध जोड़ा था । विवाह मात्र यौन संबंध के लिए ही नहीं है । परिवार बसाने, निभाने, बच्चों को संस्कारित करने के साथ-साथ गृहस्थ जीवन से समाज की भी सेवा करने का उद्देश्य निहित होता है । विवाह पूर्व परामर्श के लिए बने पाठ्यक्रमों में इन बातों पर ही बल दिया जाना चाहिए ।

विवाह, अनिवार्य नहीं, आवश्यक अवश्य है । आज कई कारणों से युवक-युवतियां विवाह से भय खाने लगे हैं । उनके विवाह संपन्न होने में इसलिए भी बहुत देर हो जाती है ।

सबसे पहली बात है कि हम विवाह को निभाने की आवश्यकता को महसूस करें, फिर तो पाठ्यक्रम भी बन जाएंगे । लड़के-लड़कियां पढ़ना भी चाहेंगे । संयुक्त परिवारों में माता-पिता और सगेसंबंधिगण विवाह को निभाने की सैद्धांतिक और व्यवहारिक युक्तियों बताते थे । परामर्श आवश्यक है । आज परिवार व समाज का रूप बादल गया । इसलिए विश्वविद्यालयों तथा सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी विवाह पूर्व परामर्श केन्द्र चलाए जाने चाहिए ।

प्रसन्नता की बात है कि गोवा विश्वविद्यालय में आज "विवाह पूर्व परामर्श केन्द्र" का उद्घाटन हो रहा है । आशा की जा सकती है कि इससे गोवा के युवक-युवतियाँ लाभान्वित होंगें ।

मृदुला सिन्हा
राज्यपाल, गोवा

6 दिसम्बर, 2017